सच्चिदानंद हीरानंद वात्सयायन 'अज्ञेय'

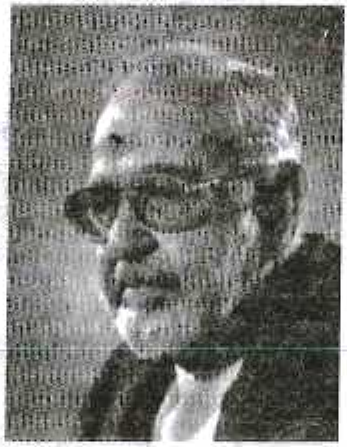

अज्ञेय का जन्म 7 मार्च 1911 ई० में कसेया, कुशीनगर (उत्तर प्रदेश) में हुआ, किंतु उनका मूल निवास कर्तारपुर (पंजाब) था । अज्ञेय की माता व्यंती देवी थीं और पिता डॉ० हीरानंद शास्त्री एक प्रख्यात पुरातत्त्वेत्ता थे । अज्ञेय की प्रारंभिक शिक्षा लखनऊ में घर पर हुई । उन्होंने मैट्रिक 1925 ई० में पंजाब विश्वविद्यालय से, इंटर 1927 ई० में मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज से, बी० एससी० 1929 ई० में फोरमन कॉलेज, लाहौर से और एम० ए० (अंग्रेजी) लाहौर से किया ।

अज्ञेय बहुभाषाविद् थे । उन्हें संस्कृत, अंग्रेजी, हिन्दी, फारसी, तमिल आदि अनेक भाषाओं का ज्ञान था । वे आधुनिक हिंदी साहित्य के एक प्रमुख कवि, कथाकार, विचारक एवं पत्रकार थे । उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं – **काव्य** : 'भग्नदूत', 'चिंता', 'इत्यलम', 'हरी घास पर क्षण भर', 'बावरा अहेरी', 'आँगन के पार द्वार', 'कितनी नावों में कितनी बार', 'सदानीरा' आदि; **कहानी संग्रह** : 'विपथगा', 'जयदोल', 'ये तेरे प्रतिरूप', 'छोड़ा हुआ रास्ता', 'लौटती पगडंडियाँ' आदि; **उपन्यास** : 'शेखर : एक जीवनी', 'नदी के द्वीप', 'अपने-अपने अजनबी', **यात्रा-साहित्य** : अरे यायावर रहेगा याद', 'एक बूँद सहसा उछली'; **निबंध** : 'त्रिशंकु', 'आत्मनेपद', 'अद्यतन', 'भवंती', 'अंतरा', 'शाश्वती' आदि; **नाटक** : 'उत्तर प्रियदर्शी'; **संपादित ग्रंथ** : 'तार सप्तक', 'दूसरा सप्तक', 'तीसरा सप्तक', 'चौथा सप्तक', 'पुष्करिणी', 'रूपांबरा' आदि । अज्ञेय ने अंग्रेजी में भी मौलिक रचनाएँ कीं और अनेक ग्रंथों के अनुवाद भी किए । वे देश-विदेश के अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर रहे । उन्हें साहित्य अकादमी, ज्ञानपीठ, स्त्रुगा (युगोस्लाविया) का अंतरराष्ट्रीय स्वर्णमाल आदि अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए । 4 अप्रैल 1987 ई० में उनका देहांत हो गया ।

अज्ञेय हिंदी के आधुनिक साहित्य में एक प्रमुख प्रतिभा थे । उन्होंने हिंदी कविता में प्रयोगवाद का सूत्रपात किया । सात कवियों का चयन कर उन्होंने 'तार सप्तक' को पेश किया और बताया कि कैसे प्रयोगधर्मिता के द्वारा बासीपन से मुक्त हुआ जा सकता है । उनमें वस्तु, भाव, भाषा, शिल्प आदि के धरातल पर प्रयोगों और नवाचरों की बहुलता है ।

आधुनिक सभ्यता की दुर्दांत मानवीय विभीषिका का चित्रण करनेवाली यह कविता एक अनिवार्य प्रासंगिक चेतावनी भी है । कविता अतीत की भीषणतम मानवीय दुर्घटना का ही साक्ष्य नहीं है, बल्कि आणविक आयुधों की होड़ में फँसी आज की वैश्विक राजनीति से उपजते संकट की आशंकाओं से भी जुड़ी हुई है । आधुनिक कवि अज्ञेय की प्रस्तुत कविता उनकी समग्र कविताओं के संग्रह **'सदानीरा'** से यहाँ संकलित है ।

हिरोशिमा

एक दिन सहसा
सूरज निकला
अरे क्षितिज पर नहीं,
नगर के चौक:
धूप बरसी
पर अन्तरिक्ष से नहीं,
फटी मिट्टी से ।

छायाएँ मानव-जन की
दिशाहीन
सब ओर पड़ीं - वह सूरज
नहीं उगा था पूरब में, वह
बरसा सहसा
बीचों-बीच नगर के :
काल-सूर्य के रथ के
पहियों के ज्यों अरे टूट कर
बिखर गये हों
दसों दिशा में ।

कुछ क्षण का वह उदय-अस्त !
केवल एक प्रज्वलित क्षण की
दृश्य सोख लेने वाली दोपहरी ।
फिर ?
छायाएँ मानव जन की
नहीं मिटीं लम्बी हो-हो कर :
मानव ही सब भाप हो गये ।
छायाएँ तो अभी लिखी हैं

झुलसे हुए पत्थरों पर
उजड़ी सड़कों की गच पर ।

मानव का रचा हुआ सूरज
मानव को भाप बना कर सोख गया ।
पत्थर पर लिखी हुई यह
जली हुई छाया
मानव की साखी है ।

बोध और अभ्यास

कविता के साथ

1. कविता के प्रथम अनुच्छेद में निकलने वाला सूरज क्या है ? वह कैसे निकलता है ?
2. छायाएँ दिशाहीन सब ओर क्यों पड़ती हैं ? स्पष्ट करें ।
3. प्रज्वलित क्षण की दोपहरी से कवि का आशय क्या है ?
4. मनुष्य की छायाएँ कहाँ और क्यों पड़ी हुई हैं ?
5. हिरोशिमा में मनुष्य की साखी के रूप में क्या है ?
6. व्याख्या करें –
   (क) 'एक दिन सहसा / सूरज निकला'
   (ख) 'काल-सूर्य के रथ के / पहियों के ज्यों अरे टूट कर / बिखर गये हों / दसों दिशा में'
   (ग) 'मानव का रचा हुआ सूरज / मानव को भाप बना कर सोख गया'
7. आज के युग में इस कविता की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए ।

कविता के आस-पास

1. हिरोशिमा कहाँ है ? इतिहास में उसकी प्रसिद्धि किसलिए है ? शिक्षक की सहायता से मालूम करें ।
2. जापान को उगते हुए सूरज का देश क्यों कहा जाता है ? कारणों को ध्यान में रखते हुए इस कविता पर टिप्पणी कीजिए ।
3. हिरोशिमा के साथ इसी प्रसंग में जापान के और किस शहर का उल्लेख होता है ? जापान के मानचित्र में इन नगरों को चिह्नित करें ।
4. द्वितीय विश्वयुद्ध में पक्ष-विपक्ष और तटस्थ देशों की सूची बनाएँ । इनमें भारत की स्थिति क्या थी ?

भाषा की बात

1. कविता में प्रयुक्त निम्नांकित शब्दों का कारक स्पष्ट कीजिए –
   क्षितिज, अंतरिक्ष, चौक, मिट्टी, बीचो-बीच, नगर, रथ, गच, छाया
2. कविता में प्रयुक्त क्रियारूपों का चयन करते हुए उनकी काल रचना स्पष्ट कीजिए ।
3. कविता से तद्‌भव शब्द चुनिए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।
4. कविता से संज्ञा पद चुनें और उनका प्रकार भी बताएँ ।
5. निम्नांकित के वचन परिवर्तित कीजिए –
   छायाएँ, पड़ीं, उगा, हैं, पहियों, अरे, पत्थरों, साखी

शब्द निधि

अरे : पहिये की धुरी और परिधि या नेमि को जोड़ने वाले दंड
गच : पत्थर या सीमेंट से बना पक्का धरातल
साखी (साक्षी) : गवाही, सबूत